vinoba

विनोबा

कथावली

वर्ष: द्वितीय | अंक: ०७

फरवरी 2026

नवाचार | पहल | प्रभाव | उत्सव | समग्र

शिक्षा की नई परिभाषा

**जहाँ कक्षा की दीवारें खत्म होती हैं,
वहाँ से शुरू होती है हमारे शिक्षकों की कहानी।**

3
प्रशासन की दृष्टि से

2
जहाँ चाह वहाँ राह

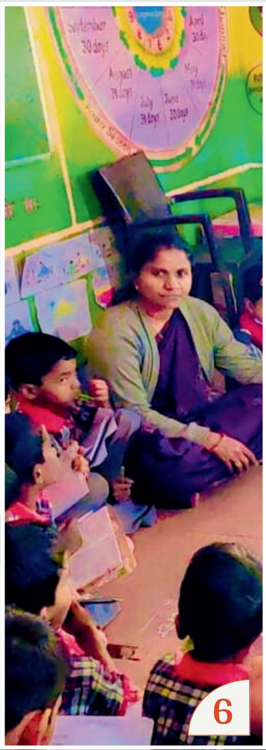

6
आत्मविश्वास की नई उड़ान

5
मिशन नवोदय

4
इम्पैक्ट कॉर्नर

www.openlinksfoundation.org

"देखो भाई, मास्टरी करो और चुपचाप घर जाओ। स्कूल सुधारने के चक्कर में पड़े तो मुसीबत मोल लोगे।"

मई 2018 में जब तुलशीराम चव्हाण ने अमरावती के पलसखेड गाँव में कदम रखा, तो इस चेतावनी से उनका स्वागत हुआ।। स्कूल की ज़मीन पर गाँव के मवेशी बँधते थे, चारों ओर अतिक्रमण था और क्लासरूम में सन्नाटा। दोपहर की चिलचिलाती धूप में बच्चों को खुले में बैठकर खाना खाते देख तुलशीराम जी का मन भर आता था। उन्होंने तय किया कि वे सिर्फ हाज़िरी भरने वाले शिक्षक नहीं बनेंगे।

बदलाव की पहली सवारी

चुनौती सिर्फ बुनियादी ढाँचे की नहीं, बल्कि गाँव वालों की उदासीनता की थी। तुलशीराम जी ने एक अनोखा प्रयोग किया—स्कूल के पहले दिन बच्चों की ट्रैक्टर पर शाही सवारी निकाली। पूरा गाँव छतों पर खड़ा होकर देखने लगा। इसके बाद उन्होंने बुज़ुर्गों और पूर्व छात्रों को स्कूल बुलाकर सम्मानित करना शुरू किया। जब पुराने छात्रों ने अपने टूटे फूटे स्कूल को नम आँखों से देखा, तो गाँव वालों की उदासीनता नरम पड़ने लगी।

जब पसीना और पैसा एक हुए वहीं से 'लोक-भागीदारी' का जन्म हुआ। सरकारी फंड का इंतज़ार करने के बजाय ग्रामीणों ने खुद कुदाल उठाई और चंदा जमा किया। चार साल की मेहनत के बाद, जहाँ बच्चे धूप में तपते थे, वहाँ आज एक भोजन कक्ष खड़ा है।

जहाँ चाह वहाँ राह

शिक्षक: तुलशीराम चव्हाण
स्थान: पलसखेड, अमरावती, महा.

धमकियों से खेल के मैदान तक

सबसे बड़ी लड़ाई अतिक्रमण की थी। जब तुलशीराम जी ने स्कूल की ज़मीन खाली कराने की बात की, तो उन्हें तीखी धमकियाँ मिलीं और उन पर झूठे आरोप लगाए गए। लेकिन वे डरे नहीं। उन्होंने ग्राम पंचायत और लोक अदालत के पुराने दस्तावेज़ों को खंगाला। महीनों की कानूनी और सामाजिक लड़ाई के बाद जीत सच्चाई की हुई। जहाँ कभी अवैध कब्ज़े थे, आज वहाँ एक विशाल खेल का मैदान है, जो अब पूरे गाँव के उत्सवों का केंद्र है।

आत्मनिर्भरता का नया पाठ

तुलशीराम जी ने शिक्षा को चारदीवारी से बाहर निकाला। स्कूल की क्यारियों में उगी सब्ज़ियाँ बच्चों की थाली का हिस्सा बनीं। बच्चों ने खुद राखियाँ बनाईं और उन्हें बाज़ार में बेचकर आत्मनिर्भरता का पहला सबक सीखा। कोरोना काल में जब स्कूल बंद हुए, तो उन्होंने 'शिक्षा आपके द्वार' अभियान चलाकर पढ़ाई रुकने नहीं दी। गाँव में पानी का संकट आया, तो जनसहयोग से 375 फीट गहरा बोरवेल खुदवाकर प्यास बुझाने का इंतज़ाम किया।

निष्कर्ष

शुरुआत में किसी ने कहा था— "अपने काम से काम रखना।" तुलशीराम जी ने वही किया। एक शिक्षक का असली काम सिर्फ पढ़ाना नहीं, बल्कि समाज की चेतना को जगाना है। आज पलसखेड का स्कूल ईंट-पत्थरों की इमारत नहीं, बल्कि अमरावती का एक जीवंत मॉडल है।

प्रशासन की दृष्टि से

“शिक्षण उत्सव बेशक सैकड़ों शिक्षकों को प्रेरित करेगा”

बस्तर की पगडंडियों पर शिक्षा की जो नई अलख जगी है, ज़िला कलेक्टर हॅरिस एस. (IAS) टीम विनोबा से एक ताज़ा बातचीत में उसी बदलाव की कहानी साझा कर रहे हैं।

- ज़िला कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट हॅरिस एस. (IAS),बस्तर, छ.ग.

बस्तर के कई बच्चे हल्बी या गोंडी में ही सोचते और बोलते हैं। वे मुख्य धारा में कैसे आएं?
बस्तर समेत सात ऐसे ज़िलों में बुनियादी साक्षरता की गतिविधियाँ और पाठ्यपुस्तकें स्थानीय बोलियों में तैयार की जा रही हैं। बच्चों के मन में विषय की समझ बैठ जाएगी, तो हिंदी की ओर बढ़ना उनके लिए आसान हो जाएगा।

स्थानांतरण (Migration) और बच्चों की उपस्थिति की समस्या को आप कैसे देखते हैं?
असल में, स्थानांतरण अब इतनी बड़ी समस्या नहीं है। आजकल माता-पिता स्थानांतरण के समय बच्चों को अक्सर घर के बुज़ुर्गों के पास घर छोड़ जाते हैं। पहले, शिक्षक बच्चों को स्कूल तक लाने का जज़्बा नहीं दिखाते थे। उनकी ही उपस्थिति अनिश्चित रहती थी। अब 'विनोबा ऐप' और सरकारी पोर्टल पर GPS ट्रैकिंग के माध्यम से हम हाज़िरी पर पैनी नज़र रख पा रहे हैं। इस पारदर्शिता ने शिक्षकों को जवाबदेह बनाया है और अब वे बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए अधिक प्रयास कर रहे हैं।
हमने शिक्षकों के मन से यह डर भी निकाला है कि कम उपस्थिति दिखाने पर उनकी नौकरी पर आंच आएगी, ताकि वे झूठे आँकड़ें न दें। हम उन्हें समझाते हैं कि डेटा के द्वारा बच्चों की कौन सी समस्याएँ सुलझाई जा सकती हैं। 'विनोबा ऐप' ने हमें क्लस्टर और स्कूल स्तर पर एक साफ तस्वीर दी है। अब हमें पता होता है कि कौन सा स्कूल अच्छा प्रदर्शन कर रहा है और कहाँ हमें ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है।

बस्तर का कोई प्रेरणादायी अनुभव बताना चाहेंगे?
कई उदाहरण हैं। काराकोरम की इस 'आश्रमशाला' को ही देख लीजिए—बेहद दुर्गम और कटा हुआ इलाका है। वहाँ करीब 50 बच्चे, एक अधीक्षक और एक शिक्षक के साथ रहते और पढ़ते हैं। कई बार घंटों, यहाँ तक कि दिनों तक बिजली नहीं रहती लेकिन इन बच्चों के अध्ययन का स्तर देखिए—वे हर सवाल का जवाब देने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे समर्पित शिक्षकों ने ही आज ग्रामीणों के मन में शिक्षा के प्रति विश्वास जगाया है।

बस्तर जैसे जटिल क्षेत्र में OLF जैसी संस्थाओं के साथ जुड़ाव कितना ज़रूरी है?
विनोबा ऐप की वजह से आज हमारे पास हर ब्लॉक, हर क्लस्टर और हर बच्चे का डेटा है, जिससे शिक्षकों का काम भी पता चलता है। इसलिए अब शिक्षकों ने बच्चों पर ज़्यादा मेहनत करना शुरू कर दिया है। अब हमारे बहुत से बच्चे '**60% से अधिक अंक**' वाली श्रेणी में आ रहे हैं। इसी सटीक डेटा की मदद से हमने शिक्षकों का युक्तिकरण (Rationalization) किया, ताकि हर स्कूल में शिक्षकों की संख्या सही अनुपात में हो। प्रशासनिक व्यस्तताओं के बीच रोज़ाना इतना बारीक डेटा जुटाना मेरे लिए नामुमकिन था। 'विनोबा' जैसे पार्टनर के साथ हम वो समस्या 3 महीने में पकड़ लेते हैं, जिसे समझने में पहले साल भर लग जाता था। इससे हम उसी शैक्षणिक सत्र के भीतर ज़रूरी सुधार कर पाते हैं।

इस बदलाव के पृष्ठभूमि पर आप शिक्षकों को क्या संदेश देना चाहेंगे?
पिछले 8 महीनों की मेहनत रंग ला रही है। सभी शिक्षक इसी लगन के साथ डटे रहें। शिक्षा ही विकास की बुनियाद है।

'शिक्षण उत्सव' से आपको क्या उम्मीदें हैं?
हमारे शिक्षकों ने बहुत मेहनत की है। 'शिक्षण उत्सव' में उन्हें सम्मानित किया जा रहा है। जब अच्छे काम को सम्मान मिलता है, तो वह सैकड़ों अन्य शिक्षकों के लिए प्रेरणा बनता है। यह प्रोत्साहन ही बस्तर की विकास यात्रा में सबको साथ लेकर चलने का सबसे बड़ा ज़रिया बनेगा।

> **“हमें विनोबा टीम का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहिए, जिन्होंने हमें ऐसा मंच प्रदान किया है, जिसके माध्यम से हमारे अच्छे कार्य देशभर में लोगों तक पहुँच पा रहे हैं।”**

— विनोद कुमार सिन्हा, जिला मिशन समन्वयक (DMC), दुर्ग, छ.ग.

इम्पैक्ट कॉर्नर

नंदुरबार, महा. : नई शुरुआत (Orientation)

नव-समावेशित ज़िले नंदुरबार में विनोबा ऐप का ओरिएंटेशन आयोजित किया गया, जिसमें 218 शिक्षकों ने भाग लिया। BEO श्री राजपूत और श्री देसाले की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित इस सत्र ने शिक्षकों को आधुनिक तकनीक से जोड़कर एक नई ऊर्जा का संचार किया।

कलंब, महा. : संवाद से सुदृढ़ होते प्रयास (Donor Visit)

12 जनवरी को विनोबा कार्यक्रम के एक Donor WOTR, के M&E ऑफिसर श्री अंकित देशमुख ने कलंब ब्लॉक के गौर और मोहा स्थित ज़िला परिषद विद्यालयों का दौरा किया। उन्होंने वहाँ के शिक्षकों से विनोबा ऐप और उससे जुड़े कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से संवाद किया और हो रहे बदलावों को सराहा।

राजनांदगांव, छ.ग. : सम्मान का उत्सव (POM)

राजनांदगांव ज़िले के डोंगरगांव ब्लॉक में ज़िला और ब्लॉक स्तर पर कुल 7 शिक्षकों और 1 CAC को सम्मानित किया गया जिनकी पोस्ट ने पूरे ब्लॉक को प्रेरित किया। इनका सत्कार BEO श्री श्रीनिवास मिश्रा और ABEO श्री गोपीराम वर्मा ने किया और उनके निःस्वार्थ परिश्रम को सराहा।

रायपुर, छ.ग. : लाइब्रेरी बैग + (POM)

ज़िला और ब्लॉक स्तर पर आयोजित 'पोस्ट ऑफ़ द मंथ', 'अकादमिक प्रोग्राम' तथा 'लाइब्रेरी बैग मंथ' पुरस्कारों के अंतर्गत कुल 4 शिक्षकों और 4 विद्यालयों को उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक कार्य व प्रदर्शन के लिए URCC श्री राजेंद्र वर्मा और ABEO श्रीमती वंदना शुक्ला द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रशंसापत्र

विद्याशाली गुडधे, शिक्षिका, जि.प. अमरावती, महा.

"माननीय CEO मॅडम, त्याचबरोबर तत्पर आणि अतिशय टॅलेंटेड असणारी विनोबा टीम यांच्या साह्याने सर्व तळागाळातील विद्यार्थ्यांना स्वतःच्या कलागुणांना त्याचबरोबर बौद्धिक क्षमतेला सिद्ध करण्याची जी संधी विनोबा ऍप द्वारे मिळवून दिली त्याबद्दल संपूर्ण विनोबा टीम चे खूप खूप आभार. विनोबा उपक्रमाच्या माध्यमातून एक नवी दिशा आम्हा शिक्षकांना लाभली, एक नव चैतन्य शिक्षक व विद्यार्थ्यांमध्ये निर्माण झाले. विजयानंतर आणि CEO मॅडमना प्रत्यक्ष पाहिल्यामुळे विद्यार्थ्यांचा आनंद गगनात मावेनासा झाला यापेक्षा आणखी आनंद कोणता तो हवा असतो आम्हा शिक्षकांना. पुन्हा विनोबा टीम, आपले शतशः आभार."

श्रीमती संजीता महापात्रा, सीईओ, अमरावती, महा.

"A stage like Nanhe Sitare is a huge boost to students, both as a place to express and to develop that edge beyond classroom learning. Extra-curricular activities will help shape children's personalities. So, Nanhe Sitare must be repeated and scaled."

Upcoming Events

- **शिक्षण उत्सव -**
  गडचिरोली, गरियाबंद, यवतमाल
- **नन्हे सितारे -**
  जांजगीर-चांपा, रायपुर, भंडारा

प्रेरणा और प्रगति

नागपुर के रुयाड गाँव की यह कहानी एक शिक्षक के उस विश्वास की है, जिसने सरकारी स्कूल की दीवारों के भीतर 'सपनों की प्रयोगशाला' खड़ी कर दी। श्री भाऊराव जिभकाटे ने केवल पाठ्यपुस्तकें नहीं पढ़ाईं, बल्कि ग्रामीण बच्चों को 'जवाहर नवोदय विद्यालय' (JNV) का रास्ता दिखाया।

> "सर ने जिला परिषद के स्कूल को इतना जीवंत और सुसज्जित बना दिया था कि मैंने अपना निजी स्कूल छोड़कर यहाँ दाखिला ले लिया।" — **नयन बांडेबुचे (छात्र)**

मिशन नवोदय: एक शिक्षक का संकल्प और रुयाड की नई पहचान

शिक्षक: श्री भाऊराव जिभकाटे | स्थान: रुयाड, नागपुर, महा.

गणित के डर से 'स्टार परफॉर्मर' बनने तक

पाँचवीं कक्षा की छात्रा अक्षरा के लिए गणित एक पहाड़ जैसा था। जिभकाटे सर ने पहचाना कि समस्या उसकी क्षमता में नहीं, बल्कि कमज़ोर बुनियादी समझ में थी। इसलिए उन्होंने अक्षरा को बुनियादी सिद्धांतों से रुबरु कराया। परिणाम? आज अक्षरा JNV में 90% से अधिक अंकों के साथ सफलता की नई ऊँचाइयाँ छू रही है। अक्षरा अकेली नहीं है; 'मिशन नवोदय' के तहत अब तक 31 छात्र अपना जीवन बदल चुके हैं।

त्याग और तकनीक का अनूठा समन्वय

जिभकाटे सर का कार्य केवल क्लासरूम तक सीमित नहीं है। उनके समर्पण के कुछ स्तंभ इस प्रकार हैं:

- **अनमोल संसाधन:** 1988 से अब तक के प्रश्नपत्रों का संकलन, जो बच्चों के अभ्यास की मज़बूत नींव है।
- **डिजिटल अनुशासन:** रोज़ सुबह 6 बजे व्हाट्सएप पर हाज़िरी; तकनीक के जरिए समयबद्धता का पाठ।
- **रविवार का परिश्रम:** रुयाड से तबादला (Transfer) होने के बाद भी, वे हर रविवार अपना अवकाश त्यागकर पुराने स्कूल के बच्चों को मार्गदर्शन देने पहुँचते हैं।
- **निःस्वार्थ मिशन**: 2002 से जारी यह निःशुल्क' सफर आज 'रुयाड मॉडल' के रूप में सरकारी शिक्षा का गौरव बन चुका है।

निष्कर्ष: श्री भाऊराव जिभकाटे का जीवन इस बात का प्रमाण है कि एक शिक्षक का संकल्प गाँव की पगडंडियों से निकलते हुए शानदार कामयाबी तक ले जा सकता है।

अपनी कहानी साझा करें, तीन आसान चरणों में

1. **कैप्चर करें**
   अपनी कहानी की फोटो/ वीडियो लें।
2. **लिखें**
   अपने अनुभव और बदलाव की छोटी सी जानकारी लिखें।
3. **अपलोड और प्रेरित करें**
   अपने विनोबा ऐप के '**Post**' सेक्शन में जाकर, '**Reflections**' के माध्यम से अपनी कहानी साझा करें।

शब्द - श्रृंखला

वर्ड-चेन चुनौती

दिमागी कसरत का खेल! क्या आप को शब्दों इस्तेमाल करने की कला है?

उदाहरण

किताब (ब) → बचपन (न) → नकल (ल) → लिखावट!

शिक्षक (क)→ क________ → ______

→ ____________ → ________ →

_________ → _______________

प्रेरणा और प्रगति

विनोबा ऐप: आत्मविश्वास की नई उड़ान

शिक्षिका: सुश्री सुमित्रा अटपलकर | स्थान: कौड़गांव, धाराशिव, महा.

धाराशिव के कौड़गांव के ज़िला परिषद स्कूल में एक अजीब सी खामोशी थी। बच्चे प्रतिभावान थे, लेकिन संसाधनों की कमी ने उनके आत्मविश्वास को झिझक की ओट में छिपा दिया था। शिक्षिका सुमित्रा अटपलकर के लिए यह सिर्फ एक स्कूल की समस्या नहीं, बल्कि एक व्यक्तिगत चुनौती थी

उन्होंने एक अनोखा प्रयोग किया। बच्चों की छोटी-छोटी उपलब्धियों और पाठों के वीडियो बनाकर यूट्यूब पर साझा करने लगीं। जब बच्चों ने खुद को स्क्रीन पर एक कलाकार की तरह देखा, तो उनके भीतर की झिझक उत्साह और फिर आत्मविश्वास में बदल गई।

प्रोत्साहन का मंच: सुमित्रा जी को अपने इस नवाचार के लिए एक सुविधाजनक मंच की तलाश थी, जो उन्हें 'विनोबा शिक्षक सहायक कार्यक्रम' के रूप में मिला। वे कहती हैं, "विनोबा ऐप केवल रिकॉर्ड का माध्यम नहीं , बल्कि हर

परिश्रमी शिक्षक का हमसफर है।" अपनी सक्रियता और 'स्पोकन इंग्लिश क्लब' जैसे प्रयोगों के दम पर उन्होंने 15 बार 'विनोबा पोस्ट ऑफ द मंथ' का सम्मान हासिल किया। ज़िले के अधिकारियों की सराहना ने उनके जुनून को और पुख्ता कर दिया। आज वे अकेली नहीं हैं; विनोबा ऐप के ज़रिये वे हज़ारों शिक्षकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं।

क्या आपने विनोबा ऐप पर नया AI मॉर्निंग असेंबली फीचर ट्राई किया है?

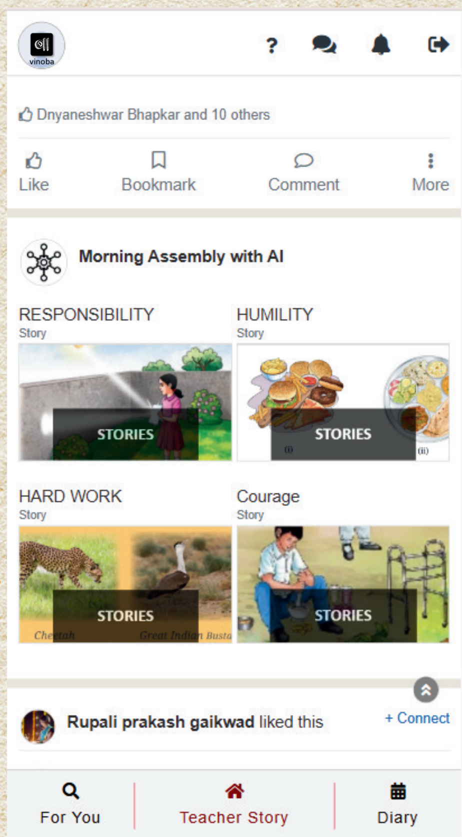

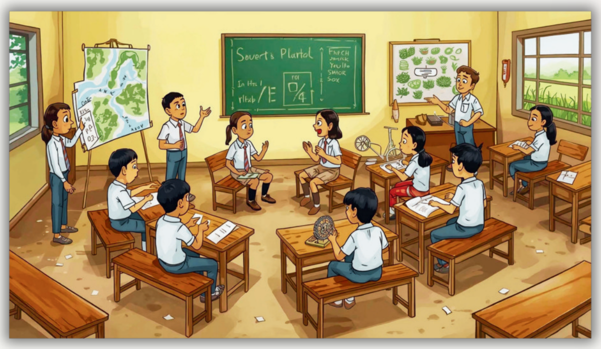

ज्ञान की अविरत धारा

लेखक: संदेश संजय थोरवे

रिटायर होने के दो साल बाद जब मैं अपने पुराने ज़िला परिषद स्कूल की देहरी पर पहुँची, तो यादों का एक समंदर साथ था। सातवीं कक्षा के सामने से गुज़रते हुए मैं ठिठक गई—कक्षा में शिक्षक नहीं थे, फिर भी सन्नाटा था। कोई शोर नहीं था बस एक गहरी एकाग्रता थी।। उत्सुकतावश मैंने खिड़की से भीतर झाँका।

कक्षा- एक कारगर तालमेल ?

भीतर का नज़ारा अद्भुत था। बेंचों को गोल घेरे में लगाया गया था। अमृता हाथ में नक्शा लिए नदियों का रास्ता समझा रही थी, तो दूसरी ओर राकेश—जो कभी गणित में खुद जूझता था—आज पूरी तन्मयता से किसी और को सवाल हल करना सिखा रहा था। किसी कोने में रवि साइकिल की चेन का मॉडल दिखा रहा था, तो कहीं फसलों पर चर्चा हो रही थी।

एक अनकहा समझौता: 'तुम मुझे, मैं तुम्हें'

वहाँ ज्ञान का एक सुंदर आदान-प्रदान चल रहा था। जैसे बच्चों के बीच कोई अनकहा समझौता हो— "जो तुम्हें आता है, वो मुझे सिखाओ; जो मुझे आता है, वो मैं तुम्हें बताता हूँ।" शिक्षक की अनुपस्थिति में भी अध्ययन रुका नहीं था। दक्षिण कोरिया के स्कूलों में जिस 'स्व-अध्ययन' (Self-study) के बारे में मैंने पढ़ा था, उसे आज अपनी आँखों से देख रही थी।

मुझे एहसास हुआ कि एक शिक्षक की असली सफलता इसी में है। तभी आत्राम गुरुजी माफी मांगते हुए आए, लेकिन मैंने मुस्कुराकर कहा, "गुरुजी, आप माफी क्यों मांग रहे हैं? आपकी अनुपस्थिति में भी बच्चे सीख रहे हैं, यह आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।"

बाहर बारिश रुक चुकी थी और स्कूल की उस कक्षा में मुझे 'ज्ञान की हरियाली' दिखाई दे रही थी। मैंने महसूस किया कि एक शिक्षक की असली सफलता इसी में है कि वह बच्चों को 'स्वाध्याय' सिखा दे, ताकि स्कूल की घंटी बजने के बाद भी उनके सीखने का सिलसिला अविरत चलता रहे।

हम अपनी कक्षा को 'शिक्षक-केंद्रित' से 'छात्र-केंद्रित' बनाने के लिए आज कौन सा छोटा कदम उठा सकते हैं?

विनोबा ऐप डाउनलोड करने और उसके बारे में और जानने के लिए अपने कैमरे से इस QR कोड को स्कैन करें।

सावित्री ओवी

शिक्षिका: योगिता मधुकरराव भुसारी फुटाणे, (ग्रामगिताचार्य) | स्थान: अमरावती, महा.

पहिली ओवी गाईली
सावित्रीच्या जन्माला
नसता तिचा जन्म तर
मुकलो असतो क्रांतीला ||1||

दुसरी ओवी गाईली
तिच्या ग लग्नाला
नव्या वर्षी लग्न करून
ज्योतिबा तिला गवसला ||2||

तिसरी ओवी गाईली
ज्योतिबाच्या बुद्धीला
नसता विचार स्त्री शिक्षणाचा
तर शिकवले नसते ग सावूला ||3||

चौथी ओवी गाईली
सावित्रीच्या शिकण्याला
धूळपाटी करुनिया
ज्योती शिकवे सावूला ||4||

पाचवी ओवी गाईली
तिच्या ग कष्टाला
शेण, माती, चिखल, ज्वर,
दगड, झेलिला अंगाला ||5||

सहावी ओवी गाईली
ज्योतीच्या प्रेमाला
मुख्याध्यापक, शिक्षिका
केले शिकून सवरुन सावूला ||6||

सातवी ओवी गाईली
शिक्षिका सावूला
शिक्षण देऊन मुलींना
समाज तू घडविला ||7||

आठवी ओवी गाईली
तिच्या ग धैर्याला
प्लेगच्या साथीतही
रुग्णसेवा कार्याला ||8||

नववी ओवी गाईली
तिच्या ग लेखणीला
सुबोध रत्नाकर, काव्य फुले
काव्य संग्रह झळकला ||9||

दहावी ओवी गाईली
तिच्या ग स्मृतीला
बालिका दिन साजरा करू
चरणी वंदन हेच तिला ||10||

शिक्षा समाचार

महाराष्ट्र के गाँवों में गूँजी 'जर्मन और जापानी'

आमतौर पर ग्रामीण स्कूलों को संसाधनों की कमी से जोड़ा जाता है, लेकिन महाराष्ट्र के ज़िला परिषद स्कूलों के शिक्षकों ने इस धारणा को बदल दिया है। छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद) के गडीवाट गाँव और पुणे ज़िला परिषद के कई स्कूलों में शिक्षक बिना किसी सरकारी आदेश के बच्चों को विदेशी भाषाएँ सिखा रहे हैं।

'महाराष्ट्र के फुंसुक वांगडु' कहे जाने वाले नवपुते सर जैसे शिक्षक मोबाइल ऐप्स और ऑनलाइन वीडियो के ज़रिए बच्चों को वैश्विक स्तर पर तैयार कर रहे हैं। इन शिक्षकों का मानना है कि भाषा केवल संवाद नहीं, बल्कि दुनिया को देखने की 'एक नई खिड़की है। यह पहल साबित करती है कि यदि सोच बड़ी हो, तो हमारे गाँव भी वैश्विक शिक्षा के केंद्र बन सकते हैं।

जब स्कूल बने समुदाय का केंद्र

दुनिया भर में शिक्षा अब चारदीवारी से बाहर निकल रही है। यूरोप के गाँवों में अब गणित और विज्ञान खेतों में किसानों के साथ आँकड़ों को समझकर सीखा जा रहा है। वहाँ तकनीक 'उद्देश्य' नहीं, बल्कि स्थानीय समस्याओं को सुलझाने का 'साधन' बन गई है।

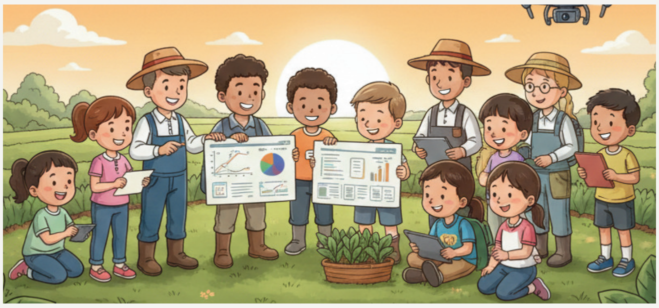

वहीं, दक्षिण कोरिया में एक अनोखा 'ग्रैनी स्कूल (Granny School)' मॉडल उभर रहा है। जहाँ बच्चों की कम संख्या के कारण स्कूल बंद होने की कगार पर थे, वहाँ गाँव के बुज़ुर्गों ने छात्रों के साथ डेस्क साझा की है। ये बुज़ुर्ग बच्चों को लोककथाएँ और जीवन मूल्य सिखा रहे हैं, जबकि बच्चे उन्हें डिजिटल दुनिया से जोड़ रहे हैं। यह 'पीढ़ीगत सेतु' बताता है कि शिक्षा की ज़िम्मेदारी केवल व्यवस्था की नहीं, बल्कि पूरे समुदाय की है— ठीक वैसे ही जैसे विनोबा ऐप पर हम एक-दूसरे के सहायक बनते हैं।

2026 की शिक्षा

AI और ब्लेंडेड लर्निंग का उदय आने वाला समय शिक्षकों को तकनीक के साथ और सशक्त बनाने वाला है। 2026 तक AI (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और 'ब्लेंडेड लर्निंग' (ऑनलाइन + ऑफलाइन का मेल) कक्षा का भविष्य तय करेंगे। तकनीक शिक्षक की जगह नहीं लेगी, बल्कि उसे प्रशासनिक बोझ से मुक्त कर बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतों पर ध्यान देने का समय देगी। विनोबा ऐप इसी 'स्मार्ट बदलाव' की दिशा में एक बड़ा कदम है, जहाँ हर शिक्षक के पास अपनी डिजिटल पहचान और संसाधनों का ख़ज़ाना है।

कैलेंडर से आगे

क्या शिक्षा केवल स्कूल की घंटी और छुट्टियों के बीच सीमित होनी चाहिए? भारत से लेकर अफ्रीका तक के 365-डे-स्कूल के सफल मॉडल बताते हैं कि सीखना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया (Continuous Process) है। चाहे गर्मी की छुट्टियाँ हों या कोरोना जैसी आपदा, सीखने का सिलसिला टूटना नहीं चाहिए।

हमारे साथ जुड़ें
@Openlinksfoundation on

कार्यालय क्रमांक 403, चौथी मंजिल, पिकासो केदारी लैंडमार्क, केदारी नगर, वानवाड़ी, पुणे - 411040

जिला प्रशासन के साथ मिलकर, OLF ओपन लिंक्स फाउंडेशनका हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी शिक्षकों को प्रोत्साहित व पुरस्कृत कर उनमें अभिनव उपक्रम लागू करने की क्षमता और शिक्षा का स्तर बढ़ाता है।